कृषि किरण अंक-10, दिसंबर 2020: पृष्ठ: 01-05
http://saaer.org.in

कृषि क्षेत्र में तरक्की की भारी कीमत चुकाता हरियाणा

ज्योति रानी

सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला कॉलेज, तोशाम, भिवानी, हरियाणा

स्वतन्त्रता के बाद पूरे देश के साथ साथ हरियाणा प्रदेश ने भी कृषि क्षेत्र में भारी तरक्की दर्ज की है। तरक्की का आलम यह है की हरियाणा कृषि उत्पादन में अग्रणी राज्यों की श्रेणी में अपनी उपस्थिती दर्ज करा चुका है। समूचा देश हरियाणा प्रदेश द्वारा एक बड़ी आबादी का पेट भरने में हासिल की गई क्षमता का कायल है। परंतु इस क्षमता की प्राप्ति के उत्सव में विडम्बना यह है की प्रदेश ने क्या गँवा दिया व क्या पीछे छूट गया इस बारे में सोचने की किसी को फुर्सत नहीं है। इस लेख में हम हरियाणा प्रदेश द्वारा कृषि क्षेत्र में उपलब्धि के निहितार्थ उसके परिणाम के बारे में आंकलन करने का प्रयास करेंगे।

विस्तृत अध्यन के लिए हमें प्रदेश में कृषि क्षेत्र में आई क्रांति से पहले के हरियाणा के बारे में जानना होगा। बीसवीं सदी के छटे व सातवें दशक से पहले इस क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा विशेष कर आज का दक्षिणी हरियाणा शुष्क जलवायु क्षेत्र होने के कारण प्रकृति के आधीन था। कृषि के लिए कृत्रिम या आधुनिक सिंचाई के साधन नगण्य थे व कृषि पूर्णत बरसात पर निर्भर थी। फलस्वरूप कृषि भूमि का एक बड़ा हिस्सा अनुपयोगी रहता था। विशेष कर गाँव के चारों तरफ पड़ी जोहड़ी व सामलात भूमि, खेतों की विस्तृत मेड़, गोचर भूमि, धार्मिक स्थलों के अधीन आने वाली भूमि, कांकड़ यानि के एक दूसरे गावों के बीच सीमांत भूमि आदि सभी स्थल सदियों से अछूते पड़े हुए थे जो जीवनोपयोगी औषधीय पौधों व वन सम्पदा की धरोहर को संचित किए हुए थे। इनमें अधिकतम स्थल वन्य प्राणियों की शरणगाह के साथ आदम जाती से अछूते रहते थे।

इसके साथ हरियाणा में सिंचाई के साधनों के विस्तार का उल्लेख करना अनिवार्य है। जर्नल ऑफ रुरल डेव्लपमेंट वॉल 36, न 4, अक्तूबर - दिसम्बर 2017 में दिये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में 1966-67 में कुल सिंचित क्षेत्र जो 1.2 मिलियन हक्टेयर होता था वह 2012-13 में बढ़कर 3.1 मिलियन हक्टेयर हो गया। इसमें भूमिगत साधनों से सिंचाई क्षेत्र 0.6 मिलियन हक्टेयर से 283 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज करते हुए 1.7 मिलियन हक्टेयर हुआ व नहरों से सिंचाई

क्षेत्र 0.9 मिलियन हक्टेयर से 144 प्रतिशत बढ़ कर 1.3 मिलियन हक्टेयर हो गया। यहाँ एक बात उल्लेखनीय रही की सिंचाई के साधनों में अधिकतम विस्तार दक्षिणी हरियाणा के शुष्क जलवायु क्षेत्र में ही दर्ज किया गया है।

इस प्रकार सिंचाई के साधनों में क्रांति के साथ ही प्रदेश का बड़ा हिस्सा सिंचित क्षेत्र बन गया। पूरे प्रदेश में नहरों व ट्यूबवेल का जाल बिछना शुरू क्या हुआ प्रदेश की समूची भूमि सिंचाई के अधीन आ गई। बारानी क्षेत्र जहां आज नहरों व ट्यूबवेल का जाल बिछा नज़र आता है उसने क्षेत्र को वनस्पति विहीन करने में दो धारी तलवार का काम क्या है। ऊपरी भूमि सिंचित होने के कारण शुष्क क्षेत्रीय वनस्पति लुप्त होने लगी तथा भूगर्भ से पानी की धुलाई के कारण जलस्तर गहरा, और गहरा होता चला गया जिसके दुष्प्रभाव के कारण बड़े व गहरी जड़ों वाले पेड़ों का जीवन खतरे में पड़ता चला गया। नौबत यहाँ तक आ पहुंची है की प्रदेश सरकार द्वारा भिवानी व चरखी दादरी जिलों के बाढ़ड़ा, तोशाम, लोहारु व सिवानी सहित अनेक क्षेत्रों को डार्क जोन घोषित करना पड़ा है ताकि भूमिगत जलदोहन पर लगाम लगाई जा सके।

यदपि सुविधा सम्पन्न हरियाणा कृषि उत्पाद में देखते ही देखते ऊँचाइयाँ छूने लगा। कृषि में मशीनों का अधिकतम उपयोग समय की मांग के रूप में उभरा व खेतों में पेड़ पोधों को प्राथमिक अवस्था में ही रोंद दिया जाने लगा। कृषि सामाजिक गतिविधि से आर्थिक गतिविधि का रूप धारण करने लगी। कृषि भूमि की बढ़ती मांग के तहत सदियों से भांति भांति के जीवनोपयोगी व वन सम्पदा पेड़ पोधों की शरणगाह के रूप में उपलब्ध पड़ती भूमि का इस कदर क्षरण शुरू हुआ की देखते देखते लुप्त हो चली है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र में प्रगति का यह दौर इतिहास कारों द्वारा प्रदेश में औषधीय पोधों व वन संपदा की विलुप्ति के दौर के रूप में रूप में जाना जाता रहेगा।

इस दौर में औषधीय पोधों की अधिकतम प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुकी है जिसमें से कुछ का यहाँ उल्लेख अनिवार्य हो जाता है।

खींप: हिन्दी में खींप के नाम से जाना जाने वाला पौधा एक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाया जाने वाला आयुर्वेदिक पौधा अर्थात एक प्रकार की घास होती है। यह हरियाणा की धरती से विलुप्त होने के कगार पर है।

अशवगंधा: हिन्दी में इसे असगंध, अक्सन्ढ, अँग्रेजी में विंटर चेरी कहते हैं। इसके मूल 1 से डेढ़ फुट लंबे होते हैं तथा घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है इसका पौधा टेढ़ा मेढ़ा व 3 से 4 फूट ऊंचा होता है; फूल गुच्छों में लगते हैं व फल गोलाकार, रक्तवर्ण, मटर के आकार में होते हैं। उत्पति स्थान शुष्क प्रदेश हैं। हरियाणा के दक्षिणी जिलों में पाया आने वाला ये पौधा आज विलुप्ति के कगार पर है।

सत्यानाशी: सत्यानासी एक औषधीय पौधा है। इसका उपयोग घाव ठीक करने, खुजली व कुष्ठ रोग में किया जाता है। यह पौधा आज हरियाणा में विलुप्त होने के कगार पर है।

गडु म्बा: गडु म्बा यानि इंद्रायन की बेल दक्षिण हरियाणा तथा पश्चिमोत्तर भारत सहित अनेक देशों में पाई जाती है। इसके पत्ते तरबूज के पत्तों के समान, फूल नर और मादा दो प्रकार के तथा फल नांरगी के समान दो इंच से तीन इंच तक व्यास के होते हैं। ये फल कच्ची अवस्था में हरे, पश्चात् पीले हो जाते हैं और उन पर बहुत सी श्वेत धारियाँ होती हैं। इसके बीज भूरे, चिकने, चमकदार, लंबे, गोल तथा चिपटे होते हैं। इस बेल का प्रत्येक भाग कड़वा होता है। यह पौधा आज हरियाणा में विलुप्त होने के कगार पर है।

इसी प्रकार वन संपति की शृंखला में आने वाले सभी पेड़ पौधों में संख्या बल के हिसाब से भयावह गिरावट आई है जो विचारणीय विषय है।

प्रदेश के बदलते परिवेश में वन्य पेड़ पोधों की अनेक प्रजातियाँ जीने मरने की अंतिम लड़ाई में पहुँच चुकी है व विलुप्त होने के कगार पर है। इनमें से कुछ का यहाँ उल्लेख करना अनिवार्य है।

लेहसुवा, लसुड़ा: लेहसुवा का पेड़ व फल हरियाणा में खूब प्रचलित रहा है। परंतु पिछले कुछ सालों से इसके बीज में कीड़े का प्रकोप देखा गया है। आजकल शायद ही कहीं कोई नया पेड़ अंकुरित होते देखा गया हो। पुराने पेड़ भी खुद ब खुद नष्ट होते देखे गए हैं। यह पेड़ हरियाणा से विलुप्त होने के कगार पर है।

गुंदनी: गुंदनी या गूँद्दी का पेड़ लेहसुवा की प्रजाति में आता है । इसका फल आकार में लेहसुवा से छोटा होता है। यह पेड़ हरयाणा की धरती से लुप्त प्राय है।

सिरश, ढाक, जाल, रौंज, जांडी सहित अनेक स्थानीय पेड़: ये सब पेड़ जो हरियाणा में बहुतायत में पाये जाते थे। आज इन पेड़ों की संख्या सिमट कर लगभग 1/5 पर आ पहुंची है।

पिछले कुछ सालों में सरकार ने इस विषय पर विचार करते हुए सकारात्मक कदम उठाते हुए अनेक हर्बल पार्कों की स्थापना की है जो अपर्याप्त है। पार्कों की स्थापना को वनस्पति के फलने फूलने के लिए प्रकृतिक माहौल उपलब्ध करवाने की बजाय रमणीक स्थलों का रूप दिया जा रहा है जो एक असफल प्रयोग रहेगा।

सरकार के लिए अब समय है सचेत होने का। हर्बल पार्क स्थापित करने की बजाय शूष्क क्षेत्रीय वन सम्पदा के संरक्षण के लिए कृत्रिम प्रगति से दूर रखते हुए सैंकड़ों एकड़ के बड़े बड़े वन क्षेत्र चिन्हित करने होंगे जो पूर्णत संरक्षित हो। साथ ही विलुप्त होती वनस्पति प्रजातियों को इनमे पनाह देनी होगी ताकि वर्तमान के द्वारा भविष्य के साथ किए जाने वाले अन्याय से बचाया जा सके।